अंक 8 माहः मार्च 2025

विश्वत

मासिक पत्रिका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa AN AISECT GROUP UNIVERSITY

विश्वविद्यालय मासिक पत्रिका

"ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्चला विजये
We are Energetic, Influential and are Always Committed"

मास का सूत्र

"ज्ञान का अंतिम उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना है।"

— डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

यह वचन दीक्षांत समारोह के दौरान विद्यार्थियों को यह स्मरण दिलाता है कि डिग्री केवल एक प्रमाणपत्र नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की ज़िम्मेदारी भी है।

कुलाधिपति संदेश

दीक्षांत समारोह के अवसर पर

डॉ. सी. वी. रामन विश्वविद्यालय, खंडवा के द्वितीय दीक्षांत समारोह के अवसर पर कुलाधिपति श्री संतोष चौबे द्वारा विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए शुभकामनाएँ प्रेषित की गईं। उन्होंने कहा:

प्रिय विद्यार्थियो
आपके विद्यार्थी जीवन के निर्णायक सोपान पर एवं अपनी उपाधि सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर आपका अभिवादन! डॉ. सी-वी रामन विश्वविद्यालय खंडवा की द्वितीय दीक्षांत समारोह की सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

दीक्षांत समारोह छात्रों की शैक्षणिक यात्रा का वह पड़ाव है जहाँ से उपाधि प्राप्त कर छात्र व्यावसायिक जीवन यात्रा प्रारंभ करेंगे। सभी छात्र जीवन में एक जिम्मेदार व्यवसायी, एक सफल एवं जवाबदेह नागरिका बनने की ओर अग्रसर होंगे।

छात्र विश्वविद्यालय की रंग-बिरंगी चिरस्थाई स्मृतियो को , शिक्षा को समाज एवं राष्ट्र निर्माण में उपयोग करें और अपने निजी दायित्व का सफलता के साथ निर्वहन कर जीवन पर्यंत शिक्षा ग्रहण करते रहें।

आपके उज्जवल भविष्य की कामना के साथ

श्री संतोष चौबे ,
कुलाधिपति,
डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, खंडवा

कुलगुरु संदेश

डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा द्वारा द्वितीय दीक्षांत समारोह का आयोजन

डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा द्वारा द्वितीय दीक्षांत समारोह का आयोजन भव्यता के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर विगत दो वर्षों में विभिन्न पाठ्यक्रमों में उपाधियाँ प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को विधिवत सम्मानित किया गया। यह समारोह विश्वविद्यालय के इतिहास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में दर्ज किया गया, जहाँ माननीय कुलाधिपति एवं विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति में विद्यार्थियों को उपाधियाँ प्रदान की गईं।

इस अवधि में विश्वविद्यालय ने शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित की थीं। विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से प्रेरित होकर बहुआयामी शैक्षणिक विकास की दिशा में निरंतर अग्रसर रहा, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को समग्र रूप से सशक्त बनाना रहा।

संस्थान का मूल उद्देश्य ग्रामीण अंचलों की युवा शक्ति को ज्ञान, कौशल और नैतिक मूल्यों से समृद्ध करना रहा , ताकि वे समर्थ, आत्मनिर्भर और सक्षम भारत के निर्माण में अपनी भूमिका निभा सकें। विश्वविद्यालय की यह प्रतिबद्धता रही है कि वह अपने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में सतत सहयोग करता रहे।

कुलगुरु प्रो. (डॉ.) अरुण रमेश जोशी ने अपने संदेश में विश्वास व्यक्त किया कि विश्वविद्यालय के पूर्व और वर्तमान छात्र औद्योगिक जगत तथा समाज के सहयोग से यह संस्थान उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करता रहेगा।

डॉ. अरुण रमेश जोशी,
कुलगुरु ,
डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, खंडवा

अंक 8, क्रमांक -2,
माहः मार्च 2025

विश्वत

डॉ.सी.वी.रामन विश्वविद्यालय, खंडवा में भव्य दीक्षांत समारोह सम्पन्न

स्मारिकाओं का विमोचन, मानद उपाधि का सम्मान, स्वर्ण पदक वितरण और प्रेरक उद्बोधन बने समारोह की विशेष झलकियाँ

डॉ.सी.वी.रामन विश्वविद्यालय, खंडवा में हाल ही में आयोजित दीक्षांत समारोह एक ऐतिहासिक अवसर के रूप में सम्पन्न हुआ, जिसमें शिक्षा, अनुसंधान, मूल्यों और नवाचार के अद्भुत समन्वय ने एक प्रेरक वातावरण निर्मित किया। समारोह का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलसचिव महोदय द्वारा परंपरागत रीति से किया गया। उनके उद्घाटन भाषण में उन्होंने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों, नवाचार-उन्मुख दृष्टिकोण और भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला।

दीक्षांतस्मारिका और नीतिदस्तावेजों का विमोचन

समारोह की शुरुआत विशिष्ट अतिथियों द्वारा दीक्षांतस्मारिका एवं नीतिदस्तावेजों के विमोचन से हुई। यह विमोचन विश्वविद्यालय की अकादमिक और प्रशासनिक पारदर्शिता का प्रतीक रहा। स्मारिका में विगत वर्ष की उपलब्धियों, शोध गतिविधियों, छात्र कल्याण योजनाओं और भावी शैक्षणिक योजनाओं को समाहित किया गया है। नीति दस्तावेजों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पर्यावरणीय जागरूकता, और डिजिटल नवाचार को प्राथमिकता दी गई है।

'रामन अनुसंधानिकी' पत्रिका का विमोचन

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठित शोध-पत्रिका 'रामन अनुसंधानिकी' का विमोचन भी किया गया। यह पत्रिका बहुविषयी अनुसंधान की अभिव्यक्ति का एक सशक्त मंच है, जो शिक्षकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों की रचनात्मक व बौद्धिक क्षमताओं को आगे लाने में सहायक है। विमोचन करते हुए अतिथियों ने शोध की गुणवत्ता और सामाजिक उपयोगिता पर बल दिया।

संपादकीय मंडल

संरक्षक : प्रो. डॉ. अरुण रमेश जोशी,
कुलगुरु, सीवीआरयू खंडवा,
प्रधान संपादक : श्री रवि चतुर्वेदी, कुलसचिव, सीवीआरयू, खंडवा,
कार्यकारी संपादक : प्रो. नेहा शुक्ला, मुख्य प्रकाशन अधिकारी
साक्षी चौहान,
सदस्य : 1. डॉ. सीमा शर्मा, डायरेक्टर रिसर्च एंड इनोवेशन
2. डॉ. गणेश मलगाया, डायरेक्टर केंद्रीय प्रयोगशाला समन्वयक
3. प्रो. योगेश महाजन, तकनीकी अधिकारी, कुलगुरु सचिवालय
संकल्पना : श्री प्रमोद पटेल, ग्राफिक डिजाइनर
प्रकाशन विभाग
संचार एवं प्रसार : श्री मनदीप सिंह पंवार, अध्ययनशाला समन्वयक
आर्यभट्ट स्कूल ऑफ डिजिटल लर्निंग
श्री हमज़ा मलिक,
वनमाली केन्द्रीय ग्रंथालय

डॉ. श्याम सिंघानिया को मानद उपाधि प्रदान

दीक्षांत समारोह में देश के जाने-माने उद्यमी, कॉर्पोरेट प्रबंधन विशेषज्ञ एवं विचारक नेता डॉ. श्याम सिंघानिया को मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। यह उपाधि उन्हें उद्यमिता, कॉर्पोरेट नैतिकता, युवा नेतृत्व निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में दिए गए योगदान हेतु प्रदान की गई। अपने वक्तव्य में डॉ. सिंघानिया ने छात्रों से कहा—"आपके ज्ञान का असली मूल्य तभी है जब वह समाज को कुछ नया दे सके।"

उपाधि और स्वर्ण पदक वितरण

दीक्षांत समारोह का प्रमुख आकर्षण रहा छात्रों को उनकी उपाधियों का वितरण। स्नातक, स्नातकोत्तर और शोध के विभिन्न संकायों के छात्रों को उपाधियाँ दी गईं। इसके अतिरिक्त, विभिन्न विषयों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को स्वर्ण पदकों से नवाजा गया। मंच पर विद्यार्थियों का आत्मविश्वास और उनके परिजनों का गर्व देखते ही बनता था।

विशेष अतिथियों के प्रेरक उद्बोधन

समारोह में विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट व्यक्तित्वों ने छात्रों को अपने अनुभवों से रूबरू कराया:

श्री हेम पाण्डे, सेवानिवृत्त सचिव, भारत सरकार (IAS) ने अपने भाषण में नीति निर्माण, सतत विकास और प्रशासनिक संवेदनशीलता की बात करते हुए कहा— **"शिक्षा केवल नौकरी के लिए नहीं, बल्कि सोचने, समझने और समाज को दिशा देने की क्षमता के लिए होनी चाहिए।"**

श्री विजय सरदाना, अधिवक्ता एवं तकनीकी-न्यायिक विशेषज्ञ ने कानूनी जागरूकता, डिजिटल परिवर्तन और नवाचार के महत्व पर बल दिया। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे तकनीकी ज्ञान के साथ मानवीय संवेदनाओं को जोड़कर समाज में बदलाव लाएं।

पद्मश्री श्री महेश शर्मा, प्रमुख 'शिवगंगा अभियान', झाबुआ ने ग्रामीण विकास, जल संरक्षण और जनभागीदारी की मिसालें देते हुए कहा— **"देश की प्रगति तभी संभव है जब गाँव, आदिवासी और युवा मिलकर विकास की धारा में सक्रिय भागीदारी निभाएं।"**

अध्यक्षीय उद्बोधन: श्री संतोष चौबे, कुलाधिपति

समारोह के अंत में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री संतोष चौबे ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। उन्होंने दीक्षांत को एक नया आरंभ बताते हुए विद्यार्थियों से कहा कि—"यह केवल उपाधि लेने का दिन नहीं, बल्कि जिम्मेदारी को समझने, समाज के लिए कुछ करने और अपने भीतर के नेता को जागृत करने का दिन है।"

उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जा रहे सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय और नवाचार आधारित कार्यक्रमों की भी चर्चा की और सभी शिक्षकों व छात्रों को बधाई दी।

सी.वी. रमण विश्वविद्यालय का यह दीक्षांत समारोह ज्ञान, संस्कार और नव निर्माण की त्रिवेणी का प्रतीक रहा। यह आयोजन न केवल अकादमिक उत्सव था, बल्कि यह संकल्प का पल भी था—समाज, देश और मानवता की सेवा में स्वयं को समर्पित करने का।

श्री श्याम रामकृष्ण सिंघानिया को मानद डॉक्टरेट सम्मान

खंडवा। डॉ. सी. वी. रामन विश्वविद्यालय, खंडवा में आयोजित दीक्षांत समारोह के दौरान उद्योग जगत की प्रतिष्ठित हस्ती श्री श्याम रामकृष्ण सिंघानिया को डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी इन मैनेजमेंट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया।

सम्मान स्वीकार करते हुए उन्होंने इसे साझा यात्रा और सहयोग की सफलता बताया। उन्होंने विश्वविद्यालय के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान न केवल उनके लिए, बल्कि उन सभी के लिए प्रेरणास्रोत है जो अपने सपनों को साकार करने का साहस रखते हैं।

उन्होंने इस सम्मान को निवेश बैंकिंग और प्रबंधन के क्षेत्र में और गहराई से कार्य करने का संकल्प बताया, जिसे वे ई.एन.ए.आर.आर. ग्रुप ऑफ कंपनीज़ के माध्यम से संचालित कर रहे हैं। सिंघानिया ने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व और परोपकारिता को भी अपने कार्य का मूल मंत्र बताया।
अंत में उन्होंने विश्वविद्यालय परिवार का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस विद्वत् समुदाय का हिस्सा बनना उनके लिए गौरव की बात है।

प्रकृति रक्षति रक्षितः: दीक्षांत समारोह में श्री हेम पांडे (आईएएस), सचिव (सेवानिवृत्त)

दीक्षांत समारोह के अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित श्री हेम पांडे (आई.ए.एस), सचिव (सेवानिवृत्त), भारत सरकार ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं उपस्थितजनों को एक अत्यंत महत्वपूर्ण जीवन-मूल्य से परिचित कराया—"Nature Protects if She is Protected" अर्थात् 'प्रकृति रक्षति रक्षितः'।
उन्होंने कहा कि यह श्लोक केवल एक नैतिक संदेश नहीं, बल्कि आधुनिक विश्व के लिए एक चेतावनी है। मनुष्य और प्रकृति के बीच का संबंध परस्पर सह-अस्तित्व पर आधारित है। यदि हम प्रकृति की रक्षा करेंगे, तो वही प्रकृति हमें सुरक्षित रखेगी—स्वास्थ्य, जीवन और संसाधनों के रूप में।
श्री पांडे ने बलपूर्वक कहा कि हमें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण, जैव विविधता की रक्षा और पारिस्थितिकी संतुलन को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार नागरिक की तरह कार्य करना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे न केवल अपनी शिक्षा को समाज सेवा में लगाएं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण को भी अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाएं।
उन्होंने बताया कि स्वच्छ वायु, शुद्ध जल, अनुकूल जलवायु, और जैव विविधता न केवल जीवन जीने के साधन हैं, बल्कि ये प्रकृति की ओर से हमें प्राप्त अमूल्य उपहार भी हैं। यदि इनकी रक्षा नहीं की गई, तो यह मानवता के लिए गंभीर संकट का कारण बन सकता है।
अपने सारगर्भित भाषण के अंत में उन्होंने कहा—"आइए, हम सब मिलकर प्रकृति की रक्षा करें, ताकि वह हमारी रक्षा करती रहे। यही सतत विकास की सच्ची भावना है, और यही भावी पीढ़ियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी भी है।"
समारोह में उपस्थित सभी लोगों ने उनके इस प्रेरणादायक संदेश का उत्साहपूर्वक स्वागत किया और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता और संकल्प का भाव भी व्यक्त किया।
अपने भाषण के अंत में उन्होंने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा—"आइए, हम सब मिलकर प्रकृति की रक्षा करें, ताकि वह हमारी रक्षा करती रहे। यही सच्चा सतत विकास है और यही एक समर्पित नागरिक की पहचान भी।"
दीक्षांत समारोह में उपस्थित छात्र-छात्राओं, शिक्षकों और अभिभावकों ने श्री पांडे के इस सारगर्भित और भावनात्मक संदेश को सराहा और पर्यावरण संरक्षण के लिए अपनी भूमिका निभाने का संकल्प लिया।

कृषि का भविष्य: दीक्षांत समारोह में श्री विजय सरदाना

दीक्षांत समारोह के अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित श्री विजय सरदाना, अधिवक्ता (सुप्रीम कोर्ट, एनजीटी एवं दिल्ली उच्च न्यायालय) तथा तकनीकी-कानूनी विशेषज्ञ एवं कॉर्पोरेट सलाहकार, ने अपने विशेष उद्बोधन में कृषि, नवाचार और सतत विकास के भविष्य पर अपने विचार साझा किए।
उन्होंने उपस्थित जनसमूह—विद्यार्थियों, कृषकों, नवाचारियों, विशेषज्ञों एवं गणमान्य अतिथियों—को संबोधित करते हुए कहा कि, "भारत की कृषि और खाद्य सुरक्षा का भविष्य आज एक निर्णायक मोड़ पर है। हम एक ऐसे समय में हैं जहाँ चुनौतियाँ भी हैं और संभावनाएँ भी। इस भविष्य का निर्धारण हम सबकी सामूहिक सोच और प्रयासों से होगा।"

अपने वक्तव्य में उन्होंने स्पष्ट किया कि भविष्य की कृषि केवल हल और बैलों की कहानी नहीं है, यह एक ऐसी प्रणाली होगी जहाँ प्रौद्योगिकी, नवाचार और सततता मिलकर काम करेंगे। उन्होंने कहा कि पारंपरिक तरीकों के साथ-साथ हमें तकनीक, डेटा विश्लेषण, और वैश्विक बाजार की समझ को अपनाना होगा।

विजय सरदाना जी ने अपने उद्बोधन में इन मुख्य बातों पर ज़ोर दिया:

आर्थिक अवसर और बाजार प्रवृत्तियाँ: आने वाला समय किसान को केवल उत्पादक नहीं, बल्कि उद्यमी बनाएगा।
चुनौतियाँ: जलवायु परिवर्तन, भूमि और जल संसाधनों की सीमितता, और बाजार की अनिश्चितता जैसी समस्याएँ गंभीर हैं।
संभावनाएँ: यदि हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नीति-समर्थन और नवाचार के साथ आगे बढ़ें, तो कृषि एक शक्तिशाली आर्थिक इंजन बन सकती है।
सहयोग की आवश्यकता: किसानों, वैज्ञानिकों, उद्यमियों, और नीति-निर्माताओं को मिलकर कार्य करना होगा—तभी हम कृषि को लाभकारी, टिकाऊ और भविष्योन्मुख बना सकेंगे।
उन्होंने भावुकता के साथ कहा—"लाभकारी कृषि का भविष्य कोई स्वाभाविक परिणाम नहीं, बल्कि एक सोच-समझ कर रचा गया भविष्य होगा। हमें अब वह बीज बोना है जो कल की समृद्धि और सुरक्षा बन सके।"
अपने प्रेरणास्पद वक्तव्य का समापन करते हुए उन्होंने सभी विद्यार्थियों और युवाओं से आह्वान किया—"आइए, हम एक ऐसा भारत गढ़ें जहाँ किसान गर्व से कहे कि वह न केवल अन्नदाता है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था और पर्यावरण का संरक्षक भी है।"

दीक्षांत संवाद: सपनों से सफलता तक की यात्रा

स्नातक छात्रों के अनुभव, चिंतन और प्रेरक सफलताओं की सजीव झलकियाँ

सिम्मी खान
(यूनिवर्सिटी टॉपर, एम.एससी. आईटी, 2021-2023)
"जब लक्ष्य स्पष्ट हो और समर्पण अडिग, तो सफलता मिलती ही है। मेरी उपलब्धि केवल मेरी नहीं, उन सभी शिक्षकों और मित्रों की है जिन्होंने मुझे हर मोड़ पर प्रोत्साहित किया। मैं शोध और नई तकनीकों में अपना भविष्य देखती हूँ।"

अम्मार सैफी
(यूनिवर्सिटी टॉपर, एमबीए, मैनेजमेंट, 2022-2024)
"नेतृत्व का अर्थ केवल निर्णय लेना नहीं, बल्कि टीम को साथ लेकर चलना है। इस विश्वविद्यालय ने मुझे नेतृत्व, रणनीति और मूल्य आधारित सोच से लैस किया। मेरा सपना एक ऐसी संस्था खड़ी करना है जो नवाचार और नैतिकता का मेल हो।"

शुभम मंगरे
(बी.एससी. कृषि, 2019-2023)
"खेती केवल व्यवसाय नहीं, बल्कि संस्कृति है। विश्वविद्यालय में बिताए चार वर्षों ने मुझे यह सिखाया कि विज्ञान और परंपरा साथ मिलकर कैसे काम कर सकते हैं। मेरा सपना है कि मैं किसानों के लिए आधुनिक तकनीकों को सुलभ और प्रभावी बनाऊँ।"

नैन्सी पाटीदार
(गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. आर्ट्स एंड ह्यूमैनिटीज़, 2020-2023)
"साहित्य और दर्शन ने मुझे जीवन को गहराई से समझने की दृष्टि दी। इस सम्मान ने मुझे प्रेरित किया है कि मैं समाज में संवेदनशीलता और चेतना का संचार कर सकूँ। भविष्य में मैं शोध और शिक्षण में अपना योगदान देना चाहती हूँ।"

श्रेया सोनी
(कला एवं मानविकी)
"शिक्षा ने मुझे अपने भीतर की आवाज़ को पहचानने में मदद की। यहाँ सीखे जीवन-मूल्य और रचनात्मक अभिव्यक्ति की शक्ति मुझे आगे बढ़ने के हर मोड़ पर मार्गदर्शन देंगे।"

प्रियंका पटेल
(एमएसडब्लू, 2021-2023)
"समाजकार्य का अध्ययन मेरे लिए केवल विषय नहीं, एक मिशन है। मैंने सीखा कि संवेदना और सेवा का संगम ही सच्चे परिवर्तन की राह है। अब मेरा लक्ष्य है ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में काम कर सकारात्मक बदलाव लाना।"

संपादकीय

"एक यात्रा का अंत नहीं, नव आरंभ का शुभ क्षण"

भारत के अमृत काल में समृद्ध युवा, सक्षम भारत की ओर

दीक्षांत समारोह हर शिक्षण संस्था के जीवन में एक ऐसा स्वर्णिम क्षण होता है, जहाँ विद्या, मूल्य, और संस्कार के बीजों का सुफल सामने आता है। यह केवल एक शैक्षणिक यात्रा की पूर्णता नहीं, बल्कि जीवन की एक नई दिशा में कदम रखने का पर्व है।

आज जब हम अपने विश्वविद्यालय के परिसर में उत्सव का यह दृश्य देख रहे हैं, तो हर युवा की आंखों में आत्मविश्वास, संकल्प और संभावनाओं की चमक दिखाई देती है। ये वही युवा हैं जो भारत के अमृत काल के पथ निर्माता हैं — एक समृद्ध, सशक्त और आत्मनिर्भर भारत के स्थापक।

अमृत काल — हमारे राष्ट्र के विकास की वह अवधि है, जहाँ हम केवल आर्थिक प्रगति नहीं, बल्कि नैतिकता, समावेशिता और नवाचार के बल पर वैश्विक नेतृत्व की ओर अग्रसर हैं। और इस परिवर्तन की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है — हमारा युवा वर्ग।

आज के स्नातक केवल अपने भविष्य को नहीं, बल्कि भारत के भविष्य को भी आकार देंगे। जब वे इस परिसर से बाहर निकलेंगे, तो अपने साथ ज्ञान, करुणा, और नेतृत्व की ज्योति लेकर जाएंगे। उन्हें केवल अपनी सफलताओं के लिए नहीं, बल्कि समाज के वंचितों, पर्यावरण की रक्षा, और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए भी तैयार रहना होगा।

हमारा विश्वविद्यालय शिक्षा को केवल डिग्री तक सीमित नहीं मानता — हम सम्पूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण में विश्वास रखते हैं। चरित्र, चेतना और कौशल के संतुलन के साथ, आज के विद्यार्थी समृद्ध युवा बनकर उभर रहे हैं — और इन्हीं युवाओं के माध्यम से सक्षम भारत का सपना साकार होगा।

यह समारोह एक अवसर है आत्ममंथन का भी — यह सोचने का कि हमारी शिक्षा प्रणाली, हमारे मूल्य, और हमारे प्रयास किस हद तक विद्यार्थियों को एक बेहतर मानव और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार कर पा रहे हैं।

इस गौरवमयी क्षण पर हम सभी स्नातकों को हार्दिक बधाई और उनके भविष्य की यात्रा के लिए मंगलकामनाएं देते हैं। हम पूर्ण विश्वास के साथ कह सकते हैं कि ये युवा जहां भी जाएंगे, अपने विचारों, कार्यों और मूल्यों से " विश्वविद्यालय " का नाम और राष्ट्र की प्रतिष्ठा दोनों को ऊँचाइयों तक ले जाएंगे।

– संपादक मंडल

"विश्वत" – विश्वविद्यालय न्यूज़लेटर